यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि
विहारशय्यासनभोजनेषु ।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं
तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ।।४२।।

सखा=मित्र; **इति**=इस प्रकार; **मत्वा**=मानकर; **प्रसभम्**=हठपूर्वक; **यत्**=जो; **उक्तम्**=कहा; **हे कृष्ण**=हे कृष्ण; **हे यादव**=हे यादव; **हे सखे**=हे सखे; **इति**=ऐसा; **अजानता**=न जानते हुए; **महिमानम्**=महिमा; **तव**=आपकी; **इदम्**=यह; **मया**=मेरे द्वारा; **प्रमादात्**=प्रमाद से; **प्रणयेन**=प्रेम से; **वा अपि**=अथवा; **यत्**=जो (आप); **च**=तथा; **अवहासार्थम्**=परिहास के लिये; **असत्कृतः असि**=अपमानित किये गये; **विहार शय्या**=विश्राम करते हुए; **आसन**=बैठे हुए; **भोजनेषु**=भोजन करते हुए; **एकः**=एकान्त में; **अथवा अपि**=अथवा; **अच्युत**=हे अच्युत; **तत्समक्षम्**=उन सखाओं के सामने; **तत्**=वह सब; **क्षामये**=क्षमा करने के लिये अनुनय करता हूँ; **त्वाम्**=आपसे; **अहम्**=मैं; **अप्रमेयम्**=हे अचिन्त्यप्रभाव प्रभो।

अनुवाद

हे अचिन्त्यप्रभाव प्रभो! आपकी इस महिमा को न जानते हुए, सखा मानकर मैंने आपको प्रेम से अथवा प्रमाद से भी 'हे कृष्ण! हे यादव! हे सखे!'—ऐसे सम्बोधित किया है और हे अच्युत! विहार एक शय्या पर शयन करते हुए तथा साथ-साथ भोजन आदि में अनेक बार अकेले में अथवा उन सखाओं के सामने भी आप मेरे द्वारा अपमानित किये गये। कृपया मेरा वह सब अपराध क्षमा करें।।४१-४२।।

तात्पर्य

यद्यपि इस समय श्रीकृष्ण अर्जुन के सामने अपने विश्वरूप में प्रकेट हैं, परन्तु अर्जुन को तो उनके साथ अपने सखाभाव का ही स्मरण हो रहा है; इसी कारण वह उनसे याचना करता है कि वे उन सभी मित्रोचित परिहासों को क्षमा कर दें, जो उसके द्वारा घटित हुये हैं। वह मानता है कि श्रीकृष्ण ने अपना अंतरंग सखा समझ कर उसे अपने विश्वरूप का वर्णन सुनाया है, पर इस विश्वरूप का साक्षात् दर्शन करने से पूर्व उसे यह ज्ञात नहीं था कि श्रीकृष्ण वास्तव में इस रूप को धारण भी कर सकते हैं। श्रीकृष्ण की महिमा न जानते हुए उन्हें 'हे कृष्ण! हे यादव! हे सखे!—इस प्रकार पुकारकर अर्जुन न जाने कितनी बार उन्हें अपमानित कर चुका था। परन्तु श्रीकृष्ण इतने अधिक अतिशय कृपामय एव दयालु हैं कि इस ऐश्वर्य से नित्ययुक्त होने पर भी वे अर्जुन के साथ मित्रोचित क्रीड़ा ही करते रहे। भक्त और भगवान् में परस्पर होने वाले चिन्मय प्रेमरस के आदान-प्रदान की ऐसी दिव्य महिमा है। जीव और श्रीकृष्ण का सम्बन्ध शाश्वत् और स्थायी है; उसे भुलाया नहीं जा सकता, जैसा अर्जुन के व्यवहार से स्पष्ट है। विश्वरूप के ऐश्वर्य का दर्शन करने पर भी अर्जुन श्रीकृष्ण से अपने सखाभाव को नहीं भूल सका।